ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

गांठदार त्वचा रोग (Lumpy skin disease)

डॉ. सुवनीत पी.

पशु विकृति विज्ञान विभाग, पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान संकाय,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, बरकछा, मिर्जापुर

गांठदार त्वचा रोग, जो एक समय भारत में नहीं था , 2019 में उड़ीसा से शुरू होकर , देशभर के कई राज्यों में रिपोर्ट किया गया है।

रोग का कारण और संचरण

बकरी चेचक श्रेणी से संबंधित गांठदार त्वचा रोग एक संक्रामक रोग है जो लम्पी त्वचा रोग वायरस के कारण होता है । यह रोग गाय और भैंसों को प्रभावित करता है लेकिन मनुष्यों या अन्य घरेलू पशुओं को प्रभावित नहीं करता है । रोग की संचरण दर 10-20 प्रतिशत और मृत्युदर 1-5 प्रतिशत है ।

रोग का संचरण मुख्य रूप से किलनी की कुछ प्रजातियों , स्टोमोक्सिस प्रजाति के मच्छरों और मच्छरों की कुछ प्रजातियों के वाहकों के माध्यम से होता है । शायद ही कभी , यह बीमारी दूध के माध्यम से , संक्रमित जानवरों के सीधे संपर्क के माध्यम से मां से संतान में फैलती है। आमतौर पर वायरस के शरीर में प्रवेश करने के 4 से 28 दिन बाद लक्षण दिखाई देते हैं।

लक्षण

मुख्य लक्षण त्वचा पर 1-5 सेमी व्यास की गोल गांठ/ उभार है । अक्सर संक्रमण का पहला लक्षण नाक और आंखों का बहना है। अन्य लक्षणों में बुखार , सिस्टिटिस, दूध उत्पादन में अचानक कमी और भूख न लगना शामिल हैं । कुछ जानवरों में पंजे , जबड़े, ठोड़ी, पेट के निचले हिस्से, अंडकोष, मुंह और नाक के अल्सर में सूजन की भी सूचना मिली है ।

संक्रमित जानवरों को प्राकृतिक रूप से ठीक होने में कई सप्ताह लग जाते हैं , जिसके परिणाम स्वरूप उत्पादकता में उल्लेखनीय कमी आती है और शरीर बर्बाद हो जाता है ।

अध्ययनों से पता चला है कि एक बार संक्रमित होने के बाद जानवर जीवनभर इस बीमारी से प्रतिरक्षित हो जाते हैं ।

निदान

संक्रमित जानवरों के रक्त से रोगजनक वायरस की आनुवंशिक सामग्री (डीएनए), या ट्यूमर या घावों से ऊतक की पहचान करने के लिए पोलीमरेज़ चेन रिएक्शन (पीसीआर) परीक्षण द्वारा निदान किया जाता है।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

उपचार एवं रोकथाम

प्रभावी एंटीवायरल दवाओं की कमी के कारण इस बीमारी का इलाज नहीं किया जा सकता है । श्वसनपथ के संक्रमण के कारण गांठों में अल्सर होने, जीवाणु संक्रमण और निमोनिया होने की संभावना के कारण लक्षणों के आधार पर एंटीबायोटिक्स आवश्यक हो सकते हैं। ट्यूमर के उपचार में तेजी लाने और अल्सर को रोकने के लिए उपचार के लिए सामयिक मलहम का उपयोग किया जाता है। डॉक्टर द्वारा बताई गई दवाओं के साथ गर्म सेक लगाने से लसीका प्रणाली पर प्रभाव के कारण अंगों में सूजन को ठीक करने में प्रभावी होता है । टीकों का उपयोग उन देशों में किया जाता है जहां यह बीमारी प्रचलित है। वर्तमान में सरकार राज्यों के पशुपालन विभागों के माध्यम से समन्वित कार्रवाई के माध्यम से टीकाकरण का संचालन कर रही है ।

रोग फैलाने वाले बाहरी परजीवियों पर नियंत्रण रोगसंचरण को रोकने का मुख्य निवारक उपाय है। जानवरों के शरीर पर लगाए गए बाहरी कीटनाशकों द्वारा टिक्सको प्रभावी ढंग से नियंत्रित किया जा सकता है, लेकिन काटने वाली मक्खियों और मच्छरों को इस विधि से नियंत्रित नहीं किया जा सकताहै। चूँकि वे खलिहान की दीवारों पर टिके होते हैं , इसलिए इन क्षेत्रों में बाहरी कीटनाशकों का प्रयोग प्रभावी होता है ।

मच्छरों और मक्खियों को दूर भगाने वाले रिपेलेंट को जानवरों पर लगाया जा सकता है। खलिहानों के खुले क्षेत्रों में मच्छरदानी लगाना भी प्रभावी होता है । आमतौर पर उपयोग किए जाने वाले फ्लाईट्रैप स्टोमॉक्सिस प्रजाति की काटने वाली मक्खियों के खिलाफ अप्रभावी होते हैं। अस्तबल में उपयोग किए जाने वाले विशेष रूप से डिज़ाइन किए गए स्थिर फ्लाईट्रैप इनके विरुद्ध प्रभावी होते हैं।

अस्तबलों के आसपास ऐसे क्षेत्र जहां मच्छर पनपते हैं , उन्हें खत्म किया जाना चाहिए। खाद के गड्ढे , मूत्रालय तथा जलाशयों को साफ रखना चाहिए। स्टोमॉक्सिस मक्खियाँ अपने अंडे सड़ती घास, सब्जियों के अवशेषों, चिकन खाद और अन्य सड़ने वाले कार्बनिक पदार्थों में भी देती हैं , इसलिए उनके नियंत्रण में पर्यावरणीय स्वच्छता सर्वोपरि है।

संक्रमित और खुले जानवरों को स्वस्थ जानवरों के साथ चरने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। संक्रमित जानवरों को स्थानांतरित करके और यदि संभव हो तो आवास बाड़ों के खुले क्षेत्रों में मच्छरदानी बांधकर बीमारी के प्रसार को रोका जा सकता है ।

चूंकि वायरस ट्यूमर से निकली पपड़ी में मौजूद हो सकता है , इसलिए खलिहान और आसपास जहां संक्रमित जानवरों को रखा गया है , उन्हें कीटाणु नाशक से कीटाणु रहित किया जाना चाहिए । इस उद्देश्य के लिए फिनोल (2%), फॉर्मेलिन (1%), आयोडीन घोल और ब्लीचिंग पाउडर का उपयोग किया जा सकता है।

चूंकि यह विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन के लिए एक उल्लेखनीय बीमारी है , इसलिए पुष्टि होने तक इस बीमारी के बारे में अनावश्यक खबरें न फैलाएं।कुछ प्रकार के फंगल संक्रमण , कीड़े के काटने से होने वाली एलर्जी और वायरल त्वचा रोगों में रोग के लक्षण समान होते हैं , इसलिए यदि रोग का संदेह हो, तो पशुचिकित्सक से परामर्श करके निदान किया जाना चाहिए।